IJAER/March-April 2018/Volume-6/Issue-5/Article No-3/ 12-15 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

तुलसीदासकृत विनय पत्रिका तथा श्रीकृष्णगीतावली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

शोशलता
शोधार्थी
सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर

डॉ. राधा कृष्ण दीक्षित
शोध निर्देशक
सनराईज विश्वविद्यालय, अलवर

सार–
महाकवि तुलसीदास ने भारतीय संस्कृति का जो बीजारोपण किया है, उसी के चलते हमारे राष्ट्र में संपूर्ण विश्व मे अपनी अलग पहचान बनाई है। गहराई से विचार किया जाए तो जब गोस्वामी जी ने जन्म लिया तब हम गुलामी की जंजीरों में छटपटाते हुए उससे निकलने का प्रयास कर रहे थे। हमारा देश उस वक्त विदेशी शासकों से आक्रांत था। विदेशी संस्कृतियां हम पर अपना अधिकार करना चाह रही थी। देश को सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक विचारधाराओं के एक धागे में पिराने वाले व्यक्तित्व का पूर्णता अभाव महसूस किया जा रहा था। न हमारे सामने अच्छे आदर्शों की सोच थी और न ही उद्देश्य तय दिखाई पड़ रहे थे। निम्न वर्ग अशिक्षा के साये म निर्धनता का दास बना हुआ था। लोगों में अकर्मण्यता घर करते जा रही थी। ऐसे समय में तुलसीदास जी के जन्म ने मानो हमारी सांस्कृतिक एवं धार्मिक भावनाओं को वटवृक्ष का रूप देने संकल्प शक्ति का संचार कर दिखाया।

प्रस्तावना–

विनयपत्रिका :
विनयपत्रिका तुलसीदास जी का गीति काव्य है। विनय पत्रिका का अर्थ है। प्रार्थना पत्र (एप्लीकेशन) या अरजी। कलिकाल के अत्याचारों से त्रस्त तुलसी राम राज्य की दुहाई देते हुए अपनी दुख भरी जीवन गाथा को राम के दरबार में प्रस्तुत करते हैं। विनय पत्रिका रामचरित मानस के समान प्रसिद्ध ग्रंथ है। भक्तों का कष्टहार होने के कारण यह भक्ति रस का असाधारण काव्य स्वीकार किया गया है। साहित्यक और दार्शनिक दोनों ही दृष्टियों से यह तुलसी की अत्यन्त पौढ़ एवं श्रेष्ठ रचना है। भक्ति विनय एवं संगीतात्मकता की दृष्टि से इसे मानस से भी बढ़कर प्रिय रचना मानी गयी है। अर्थ गम्भीर एवसं उचित वैचित्य की दृष्टि से विनय पत्रिका तुलसी की उत्कृष्ट कृति है। ये गुण विरले ही कवियों की कृतियां में उपलब्ध होते है। विषय को मार्मिक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए तुलसी ने जिस वैचित्र से काम लिए है। उसके दर्शन विनय पत्रिका में पग पग पर होते हैं। ऐसे स्थलों पर उन्होंने शब्द पंक्तियों से खूब काम लिया है। विनय पत्रिका में कुल 279 पद हैं। जो विभिन्न रागों में आबाद हैं। राम बिलावक धनाश्रीरामकली, भैरव के द्वारा राग ठोड़ी सोरठा आदि अनेक रंगों में कान्हरा *'विनय पत्रिका'* की रचना व्यवस्थित क्रम एवं एक सूत्रता होने से प्रबन्ध का अभाव मिलता है। विविध अलंकार से सुसज्जित विनय पत्रिका ब्रजभाषा की कृति है। इस ग्रंथ में विभिन्न देवी देवताओं की प्रार्थना की गयी है। कवि ने प्रथम देवता गणेश जी की स्तुति के उपरान्त सूर्य, शिव, देवी, गंगा, यमुना, काशी, श्रीचित्रकूट, हनुमान, लक्ष्मण, भरत, शत्रुध्न, सीता की वन्दना की है। अन्त में अपनी विनय पत्रिका को मां सीता के द्वारा भगवान राम के पास भेजा है। श्री राम ने इसे स्वीकार सहर्ष किया है। और भक्त तुलसी को सभी सांसारिक वेदनाओं से मुक्त कर दिया है। इसमें युगीन शासन तन्त्र भी प्रतिविम्बित होता है। यह तुलसी दास जी की अत्यन्त प्रौढ़तम रचना है। विनय पत्रिका में कुल 279 पद हैं। जो विभिन्न रागों में आबद्ध हैं। राम विलावल, धनाश्री, रामकली, भैरव कान्हरा, केदारा, टोढ़ी, सोरठा आदि अनेक रागों में विनय पत्रिका की रचना की गयी है। विनय पत्रिका रामचरित मानस जैसा ही प्रसिद्ध ग्रंथ है। भक्ति रस का असाधारण काव्य स्वीकार किया गया है। साहित्यक और दार्शनिक दोनें ही दृष्टियों से तुलसी की अत्यन्त प्रौढ़ एवं श्रेष्ठ रचना है। अरबी–फारसी के शब्दों के साथ साथ लोकोकित्त एवं मुहावरे के प्रयोग भी विनय पत्रिका में मिलते हैं।

श्रीकृष्णगीतावली :
श्री कृष्णगीतावली नामक काव्य ग्रंथ में श्री कृष्ण जी की जीवन लीलाओं का संक्षिप्त वर्णन है। तुलसीदास जी ने ब्रज भक्तों के ढंग पर कृष्ण चरित्र को आधार बना कर इस ग्रन्थ की रचना की। कवितावली और गीतावली की भांति यह भी तुलसी की एक प्रौढ़ एवं अत्यन्त कलात्मक कृति है। विद्वानों ने इस मानस के बाद की रचना स्वीकार की है। इसमें 61

स्वतंत्र पद हैं। कृष्ण की बाल सुलभ चेष्टाओं गोपियों की श्रद्धा अटूट विश्वास, आत्मनिष्ठा, अनन्यता, आदि भावनाओं का मोहक आकर्षक रूप श्रीकृष्णगीतावली में चित्रित हुआ है। इसे काव्य और भक्ति दोनों ही दृष्टि से तुलसी की एक विशिष्ट निधि स्वीकार किया जाता है। विषय निर्वाह की दृष्टि से यह निसंदेह गीतावली से भी उत्कृष्ट है। एक ही सिलसिले में कृष्ण के बाल स्वरूप से लेकर भागवत के कृष्ण तक कृष्ण चरित्र का व्यवस्थित एवं संक्षिप्त वर्णन प्रौढ़ शैली में हुआ है। अतः भाव और भाषा की दृष्टि से यह एक वैदग्ध्य पूर्ण रचना है।
तुलसी ने श्रीकृष्णगीतावली में वासल्य एवं श्रृंगाररस का ही अत्यन्त ही सजीव एवं सरस चित्रण किया है। यद्यपि सूर जैसी रमणीयता और तन्मयता का श्रीकृष्ण गीतावली में अभाव है, फिर भी हिन्दी साहित्य में अन्य कवियों की अपेक्षा यह वर्णन अधिक श्रेष्ठ है। तुलसी को वात्सल्य एवं श्रृगांर के चित्रण का अवसर मानस कवितावली तथा गीतावली में अनेक बार मिला है। परन्तु श्रीकृष्ण गीतावली में उनकी स्वच्छन्दता एवं स्वतन्त्रा दर्शीनीय है। इसमें इनका सच्चा काव्यत्व देखते ही बनता है। कविता में भी ऐसा ही वर्णन है। परन्तु वहां भी किंचित मर्यादा को लेकर अभिव्यक्त हुआ है। परन्तु श्री कृष्ण गीतावली में सूर के अनुयायी बनकर आये हैं।

श्रीकृष्णगीतावली :
इसमें 61 स्वतन्त्र मुक्त पद हैं। जिसमें 20 बाललीला के 3 रूप सौन्दर्य के 9 विरह के 2 द्रोपदी लज्जा रक्षण के हैं। सभी पद परम सरस और मनोहर हैं। श्रीकृष्णगीतावली गोस्वामी तुलसी की ब्रजभाषा में रचित गीतकाव्य हैं। सभी पद परम सरस और मनोहर हैं। पदों में ऐसा स्वाभाविक सुन्दर और सजीव चित्रण है कि पढ़ते पढ़ते लीला प्रसंग मूर्तिमय होकरश सामने आ जाता है। गोस्वामी जी के इस ग्रन्थ से यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि श्री राम के रूप के अनन्योपासक होने पर भी श्री गोस्वामी जी भगवान श्री भद्र और भगवान श्री कृष्ण में सदा अभेद बुद्धि रखते थे और दोनों ही स्वरूपों का तथा उनकी लीलाओं का वर्णन करने से अपने आपको धन्य मानते हैं।

<u>भाषा प्रयोगों के आधार पर</u>

श्रीकृष्णगीतावली	–	साहित्यक ब्रजभाषा
विनय पत्रिका	–	साहित्यक ब्रज भाषा

तुलसी ब्रजभाषा को एक व्यापक रूप देना चाहते थे उनकी भाषा को राष्ट्रीय ब्रजभाषा कहा जा सकता है। ब्रजभाषा ध्वनि प्रवृत्ति में ओकारान्त और पश्चिमी ब्रजभाषा औकारान्त ह।

तुलसीदास जी का कोई ऐसा ग्रंथ नहीं है जिसमें शुद्ध रूप से अवधी हो या शुद्ध रूप से ब्रजभाषा हो या किसी एक भाषा व्याकरण का पूरी तरह से पालन किया हो। अवधी ग्रंथों में कुछ ब्रजभाषा के व्याकरण का प्रयोग और ब्रज के ग्रंथों में कुछ अवधी के व्याकरण का प्रयोग मिल जाता है। तुलसी की कविता में प्रधान अंगी भाषा पूर्वी ब्रजभाषा है। परन्तु अवधी एवं खड़ीबोली के पुट मिलते हैं।

श्री कृष्णगीतावली की भाषा :
श्री कृष्ण गीतावली गौस्वामी तुलसी दास जी का अति ललित ब्रज भाषा में रचित बड़ा ही रसमय और अत्यन्त मधुर गीत काव्य है। इसमें कुल 61 पद हैं। शाब्दिक स्तर पर अन्य भाषायें भी हैं।

<u>अरबी फारसी के शब्द</u>

गरीब नेवाजी	61/61/3
नकीब तलफि	54/54/2
कुसाज	63/5
करतब	94/91

<u>खड़ीबोली के शब्द–</u>
<u>खड़ी बोली के शब्द</u>

नाना	10/4/1
सखा	16/2/1
लालची	28/24/3

कब	44 / 42 / 1
गोपाल	24 / 20 / 1
लाल	24 / 24 / 1

कन्नौजी के शब्द

कीबो	14 / 9
बो	14 / 9
उधो कहो	38 / 35
काहे को	53 / 53
थाक्यो	59 / 60 / 3
तज्यो	35 / 31

ब्रजभाषा–

पायें परौ	12 / 7
बहुरौं	13 / 8 / 3
उगौरी	13 / 8 / 3
जौली हौ रहौ	15 / 11 / 1
तौली हौ रहौ	15 / 11 / 1
बिचारी	37 / 33 / 1
बिस्तारौ	37 / 33 / 3
रहत हौ	37 / 33 / 3
कहत हौ	37 / 33 / 3
विसारौ	37 / 33 / 4
पारौ, मारौ,निहारौ, डारौ	38 / 34

अधिकतम रूप में ब्रज भाषा का उपयोग होने के कारण श्रीकृष्ण गीतावली की भाषा ब्रज भाषा ही है।

निष्कर्ष :

तुलसी ब्रज काव्य कृतियों में एकाधिक स्वतन्त्र भाषाओं, बोलियों और उपबोलियों का प्रयोग निश्चित सामाजिक सन्दर्भों से प्रेरित एवं प्रभावी रहा है। इन सब भाषाओं, बोलियों और उपबोलियों के प्रयोग के साथ–साथ तुलसी ने अपनी ब्रज काव्य कृतियों में सम्पर्क भाषा हिन्दी का भी प्रयोग किया है। इन सजातीय एवं विजातीय भाषाओं, बोलियों और उपबोलियों से निर्मित और विकसित हिन्दी का यह मिश्रित रूप से समाजभाषाविज्ञान में *'कोड मिश्रण'* के नाम से अभिहित किया गया है। कोड मिश्रण का अर्थ पृथक–पृथक कोडों की समन्वित संरचना से नहीं हैं, वरन् पृथक–पृथक भाषाओं, बोलियों और उपबोलियों की मिश्रित शब्द सम्पदा और रूप सम्पदा से निर्मित और विकसित स्वतन्त्र अभिनव भाषा संरचना से है। इसी अभिनव भाषा संरचना का प्रयोग तुलसी ने अपनी ब्रज काव्य कृतियों में कोड मिश्रण के रूप में किया है। यह कोड मिश्रण का प्रयोग तुलसी को सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक रचनाकार सिद्ध करता है, साथ ही साथ तुलसी काव्य को वैश्वीकरण अथवा भूमण्डलीकरण की प्रयोग प्रक्रिया से भी सम्बद्ध करता है। हिन्दी साहित्य के जिन मूर्द्धन्य साहित्यकारों ने तुलसी के भाषायी आदर्श का अनुकरण कर काव्य प्रणयन किया है उन्हें साहित्य के क्षेत्र में आशातीत लोकप्रियता प्राप्त हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1	हिन्दी भाषा संदर्भ और संरचना	डॉ० सूरजभान सिंह	साहित्य सहकार कृष्णनगर, दिल्ली–51, प्रथम संस्करण

2	सामाजिक भाषाविज्ञान	योगेन्द्र व्यास	गुजरात वि०वि० अहमदाबाद, प्रथम संस्करण, 1987
3.	भाषा और संस्कृति	सं०डॉ०भोलानाथ तिवारी	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली 1984
4.	भाषा अनुरक्षण एवं भाषा विस्थापन	सं० डॉ० श्री कृष्ण	केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, 1986
5.	भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी	डॉ० रामविलास शर्मा	राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1979
6.	आर्य और द्रविड भाषा परिवारों का सम्बन्ध	डॉ० रामविलास शर्मा	हिन्दुस्तान एकेडमी इलाहाबाद प्र० संस्करण 1979